

राजनीतिक दल और हित समूह का दबाव समूह में अंतर
राजनीतिक दल और दबाव समूह में
भिन्नभिन्न अंतर है।

- (i) राजनीतिक दल पूरे राष्ट्र के हितों की निंता करते हैं। हित समूहों का उद्देश्य सीमित होता है। अतः वे प्रायः विशेष समूह की देखरेख करना अपना ध्येय बनाते हैं।
- (ii) राजनीतिक दलों अपना सिद्धान्त, नीतियों और कार्यक्रम होता है जिसकी सहायता से वे समुदाय के महत्वपूर्ण समस्याओं को सुलझाना चाहते हैं। दबाव समूह अपने सदस्यों के विशेष हितों की रक्षा के लिए कुछ परिवर्तन मात्र करना चाहता है।
- (iii) राजनीतिक दल अपनी नीतियों और कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने के लिए शासन के पक्ष पर पहुँचना चाहते हैं, परन्तु हित समूह ऐसा प्रयत्न नहीं करते हैं। यदि कोई हित समूह यह निर्णय लेता है कि उसके सदस्य चुनाव लड़कर शासन के पक्ष पर पहुँचना चाहते हैं, तो फिर उसका मूल स्वरूप हित समूह नहीं रहता है। बल्कि वह राजनीतिक दल का रूप धारण कर लेता है।

विकसित देशों में दबाव समूह या हित समूह राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आर्सेर कैरले ने 1908 ई० में अपनी कृति द प्रोसेस आफ गवर्नमेंट (The Process of Government) में पहला व्यवस्थित अध्ययन प्रस्तुत किया था। भारत में दबाव समूह सीमित स्तर पर कार्य करते हैं। भारत में विहित स्वार्थों का प्रतिनिधित्व करने वाले समूह बहुत हैं, लेकिन जनसाधारण के हितों की देखरेख करने वाले समूह बहुत कम हैं। उपाहरण के लिए वाणिज्य-व्यापार से संबन्धित समूह वाणिज्य मंडल अधिक सक्रिय हैं परन्तु उपभोक्ताओं के हित समूह नहीं के बराबर हैं। औद्योगिक क्षेत्र में मालिकों और मजदूरों के बीच के संबंध प्रभावित सक्रिय हैं। यदि कारण है कि हमारे देश का ऋण कानून इतना उन्नत है।

लोकतंत्र का ध्येय जन-आभिलाषाओं को पूरा करना है। परन्तु जनसाधारण अपने सामान्य हितों के प्रति इतना सजग नहीं होता जितना सजग अपने निहित स्वार्थ के प्रति होता है। विकासशील देशों में तो व्यापक निधनता के कारण जनसाधारण के हितों को देखरेख करने वाले संगठन और मास मीडिया से बन पाते हैं नतीजा यह होता है कि प्रभावशाली वर्ग अपने स्वार्थों को बहावा देने के लिए हित समूह का प्रयोग करते हैं, परन्तु सामान्य हित को उपेक्षा होती है। अतः किसी देश में लोकतंत्र को सुदृढ़ता के परवरण के लिए यह देखना भी जरूरी है कि वहाँ किन-किन हितों का प्राथमिकत्व करने वाले हित समूह सक्रिय हैं।